अकलंक महाविद्यालय के नवीन भवन निर्माण हेतु भूमिपूजन कार्यक्रम में माननीय अध्यक्ष का सम्बोधन

जय जिनेन्द्र;

शिरोमणि आचार्य श्री 108 विशुद्ध सागर जी महाराज को प्रणाम। आज यहाँ उपस्थित आप के शिष्य परम पूज्य मुनि श्री 108 आदित्य सागर जी महाराज ससंघ को प्रणाम।

अभी कुछ ही दिनों पहले परम पूज्य, संत शिरोमणि, हम सब के श्रद्धेय आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज ने समाधि ली, मैं उन्हें कोटि-कोटि प्रणाम करता हूँ। उनके विचार मानवता को सदा राह दिखाते रहेंगे।

अकलंक विद्यालय एसोसिएशन के अध्यक्ष श्री विकास जैन अजमेरा,कोषाध्यक्ष श्री कपिल जैन,सचिव श्री राकेश जैन; तथा आज महाविद्यालय के नवीन भवन के भूमि पूजन कार्यक्रम में पधारे सभी गणमान्यजन को नमस्कार।

हमारे देश में शिक्षा और दीक्षा के लिए जैन समाज सदा आगे रहा है।भगवान श्री आदिनाथ से लेकर भगवान महावीर और इसके बाद समाज के लोगों ने शिक्षा को महत्व दिया है।

मानवतावादी मूल्यों को सशक्त कर इस संसार को आगे बढ़ाने में जैन समाज का महान योगदान है। जैन शिक्षाएं हर एक मनुष्य के बीच स्वतंत्रता, समानता और बंधुता के सिद्धांत का प्रसार करती हैं। जैन धर्म ने भारत में वास्तुकला और साहित्य को समृद्ध किया। शांतिपूर्ण सहअस्तित्व, अहिंसा और सहयोग से दुनिया को निरंतर बेहतर बनाया है।

कोटा में भी अकलंक संस्था ने पिछले कई दशकों से कोटा-बूंदी के बालक-बालिकाओं को सुशिक्षित करने का काम किया है। व्यक्तित्व निर्माण से राष्ट्र निर्माण की जिम्मेदारी आपने बड़ी प्रमुखता से निभाई है। मुझे बताया गया है कि आज अकलंक संस्था के तीन स्कूल और दो कॉलेज कोटा में संचालित हो रहे हैं। आज अकलंक महाविद्यालय की 25वीं वर्षगांठ भी हम मना रहे है।

इसी अवसर पर महाविद्यालय के नवीन भवन का शिलान्यास आज यहाँ संतों के सानिध्य में हो रहा है, इसके लिए मैं आप सभी को बधाई देता हूँ।

कोटा के रामपुरा, बसंत विहार और मंडाना में आपके संस्थान के विद्यालय आज उत्कृष्ट प्रदर्शन कर रहे हैं। वहीं अकलंक बीएड कॉलेज और जनरल कॉलेज से भी हर साल कई स्टूडेंट यूनिवर्सिटी मेरिट में अपनी जगह बना रहे हैं। इस संस्थान से निकालने वाले स्टूडेंट्स देश के बड़े-बड़े संस्थानों से आगे की पढ़ाई कर रहे हैं, सरकारी नौकरियों से लेकर विभिन्न क्षेत्रों में अपनी पहचान बना रहे हैं। यह वास्तव में गौरवशाली है।

दुनिया के सबसे विशाल लोकतंत्र और विविध देश भारत में अनेक सभ्यताओं ने जन्म लिया है। अनेक धर्म और सभ्यताओं का यहाँ विकास हुआ है। यहाँ अनेक संस्कृतियाँ फली-फूली हैं।

यह भूमि उल्लास और उत्सव के साथ त्याग और समर्पण की भूमि है। यह विनय और वीरता की भूमि है।

जैन धर्म इस भारत भूमि का गौरव है। जैन धर्म विश्व के सबसे प्राचीन धर्मों में से एक है। 'अहिंसा परमो धर्म' तथा 'जियो और जीने दो' का जो संदेश जैन धर्म ने दुनिया को दिया है, मैं समझता हूँ कि यह संदेश हर युग में प्रासंगिक रहा है।

दुनिया में दो महायुद्ध हो चुके हैं। धर्म, नस्ल, जाति, विचारों और प्रभुत्व के नाम पर अनेक युद्ध और संघर्ष दुनिया में हुए हैं। हमने देखा हैं कि इनका परिणाम विषाण के अलावा कुछ नहीं रहा। करोड़ों लोग और कई सभ्यताऐं नष्ट हो गए, तब जाकर दुनिया ने अहिंसा के उस सिद्धांत को सर्वोपरि माना है, जो जैन धर्म ने हजारों वर्ष पहले दुनिया को दिया। इतिहास से लेकर वर्तमान और आने वाले भविष्य की जितनी भी बड़ी समस्याएं हैं, जैन धर्म की शिक्षाओं में हर समस्या का समाधान है।

इतिहास साक्षी है कि अहिंसा के इस मूल सिद्धांत के आधार पर ही एक महात्मा ने भारत की आज़ादी की लड़ाई को नेतृत्व दिया था। और हजारों साल पहले हमारे 24वें तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी ने सबसे पहले संसार को अहिंसा, क्षमा, करुणा और त्याग का संदेश दिया था। इसके बाद से जैन धर्म के

अनुयायियों ने दुनिया भर में भगवान महावीर के संदेशों का प्रसार किया है। भगवान महावीर ने कहा था कि अहिंसा सबसे बड़ा धर्म है।

भारत के दर्शन, विचार, साहित्य, वास्तुकला और विज्ञान को समृद्ध बनाने का काम भी जैन समुदाय ने सदैव किया है। माउंटआबू के दिलवाड़ा मंदिर, पाली के रणकपुर जैन मंदिर, करौली के श्री महावीर जी मंदिर, अलवर के तिजारा जैन मंदिर और यहाँ कोटा और जयपुर के जैन मंदिरों में हम देखते हैं कि इन धर्म स्थलों में शांति की अनुभूति तो होती ही है, साथ ही ये वास्तु और शिल्प कला के भी नायाब उदाहरण हैं।

मेरा अपना अनुभव है कि जैन धर्म के लोग परिश्रमी होते हैं और साथ में परमार्थ एवं अपरिग्रह पर विश्वास रखते हैं। जितना अपने काम का है, जितनी जीवन को जरूरत है, उतना अपने पास रख लिया, बाकी का समाज और जरूरतमंदों की सेवा में लगाना ही **अपरिग्रह** का महान संदेश है।

इसीलिए आज हम देखते हैं कि कई अस्पताल, विद्यालयों-महाविद्यालयों के निर्माण में समाज ने महती योगदान दिया है। और उन संस्थानों को मानवता के लिए समर्पित कर दिया है।

आज़ादी के आंदोलन में राष्ट्र के लिए न जाने कितने जैनों ने कारावास भोगा, अपने प्राण न्योछावर कर दिए, क्रांतिकारियों को आर्थिक सहयोग के लिए तिजोरियां खोल दी और प्रतिदान में कभी यह भी अपेक्षा नहीं की कि मेरा नाम अख़बारों में आए।

समाजसेवा के क्षेत्र में जैन समाज ने हज़ारों अस्पताल पूरे देश में बनवाएँ जहाँ गरीबों का निःशुल्क इलाज चलता है। हज़ारों विद्यालय-महाविद्यालय पूरे देश में सिर्फ़ इसलिए बनाए ताकि राष्ट्र का भविष्य अनपढ़ न रहे।

जैनों ने पशु- पक्षियों के लिए अस्पताल तथा गौशालाएँ भी जीव रक्षा के प्रधान उद्देश्य से बनवाई। आज भी दिगंबर तथा श्वेतांबर जैन मुनि पूरे भारत में नंगे पैर पैदल भ्रमण करते हैं तथा अहिंसा, दया, मैत्री, करुणा, शाकाहार, शांति का संदेश गाँव-गाँव में, नगर-नगर में फैलाते हैं।

जनता को शुद्ध अहिंसक जीवन-शैली, राष्ट्रभक्ति तथा नैतिकता का प्रशिक्षण भी देते हैं।

इन सभी सद्-संस्कारों के पीछे जैन के सभी तीर्थकारों की वे महान शिक्षाएं हैं जिनका आज भी किसी न किसी रूप में पालन किया जा रहा है। महान तीर्थंकरों ने कोरा उपदेश ही नहीं दिया, बल्कि आचरण में लाकर प्रेरणा दी, जो एक सही गुरु का कर्तव्य होता है।

जैन दर्शन की प्रेरणा से आज का युवा सिर्फ उद्यम ही नहीं कर रहा, बल्कि सेवा के क्षेत्र में भी आगे बढ़ रहा है। उद्योग के साथ समाज सेवा, शिक्षा, अनुसंधान जैसे कई क्षेत्रों में हमारे युवा आगे बढ़ रहे हैं। अपने साथ ही देश और समाज के लिए भी बेहतर कर रहे हैं। आज समाज की महिलाएं भी नित नए आयाम गढ़ रहीं हैं। और मैं यह जब देखता हूँ, तो बड़ी खुशी होती है।

आज हमारा देश दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में शामिल है। आज भारत तेजी से आगे बढ़ रहा है। और अगले 25 वर्षों में भारत की यह रफ्तार दोगुनी-चौगुनी होने वाली है।

हम अपने देश के सामने खड़ी चुनौतियों से ऊपर उठकर देश के लिए पूर्ण समर्पण भाव से जुट जाएं। भारत ने अपनी स्वतंत्रता के 75 वर्ष पूरे कर लिए हैं।

अगले 25 वर्षों बाद हम अपनी स्वतंत्रता की 100 वीं वर्षगाँठ मनाएंगे। उन 25 वर्षों तक हम एक भारत-श्रेष्ठ भारत के विज़न पर सामूहिकता से काम करें। हम अपने देश के जिम्मेदार नागरिक बनें, अपने कर्तव्यों पर ज़ोर दें; यही हमारा ध्येय होना चाहिए।

मुझे विश्वास है कि अकलंक संस्थान अपनी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा से व्यक्तित्व निर्माण से राष्ट्र और समाज के निर्माण एवं उत्थान में समर्पण भाव से काम करता रहेगा।

इसी संदेश के साथ आप सभी को बहुत बहुत शुभकामनाएं। इस बेहतरीन आयोजन के लिए आयोजक गणों को अनेक शुभकामनाएं। धन्यवाद। जय जिनेन्द्र।